

## गिरिजा स्तुति

जय जय गिरिबरराज किसोरी । जय महेस मुख चंद चकोरी ॥  
जय गजबदन षडानन माता । जगत जननि दामिनि दुति गाता ॥  
नहिं तव आदि मध्य अवसाना । अमित प्रभाउ बेदु नहिं जाना ॥  
भव भव बिभव पराभव कारिनि । बिस्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि ॥

पतिदेवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख ।

महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष ॥

सेवत तोहि सुलभ फल चारी । बरदायनी पुरारि पिआरी ॥  
देबि पूजि पद कमल तुम्हारे । सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे ॥  
मोर मनोरथु जानहु नीकें । बसहु सदा उर पुर सबही कें ॥  
कीन्हेउं प्रगट न कारन तेहीं । अस कहि चरन गहे बैदेहीं ॥  
बिनय प्रेम बस भई भवानी । खसी माल मूरति मुसुकानी ॥  
सादर सियँ प्रसादु सिर धरेऊ । बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ ॥  
सुनु सिय सत्य असीस हमारी । पूजिहि मन कामना तुम्हारी ॥  
नारद बचन सदा सुचि साचा । सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा ॥

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो ।

करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ॥

एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली ।

तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।

मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥